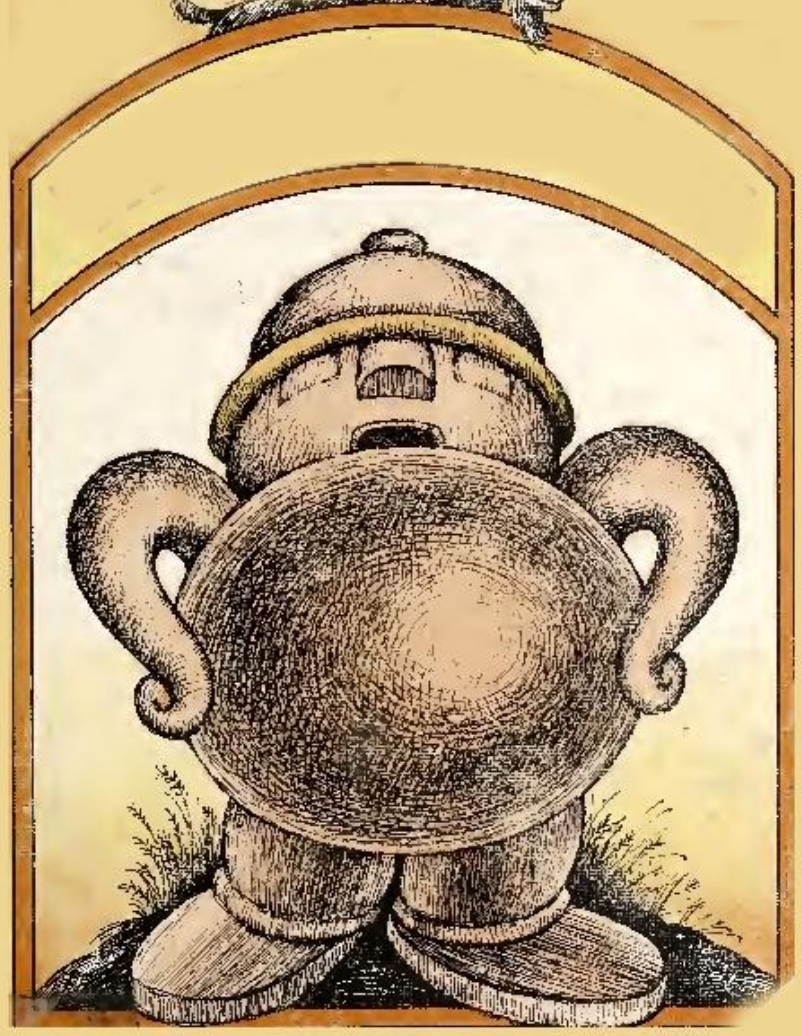
मिट्टी के घड़े वाला लड़का

एक रूसी कहानी पर आधारित

पुनर्कथन:
सिंथिया जेमसन



चित्र:
अर्नोल्ड लोबेल

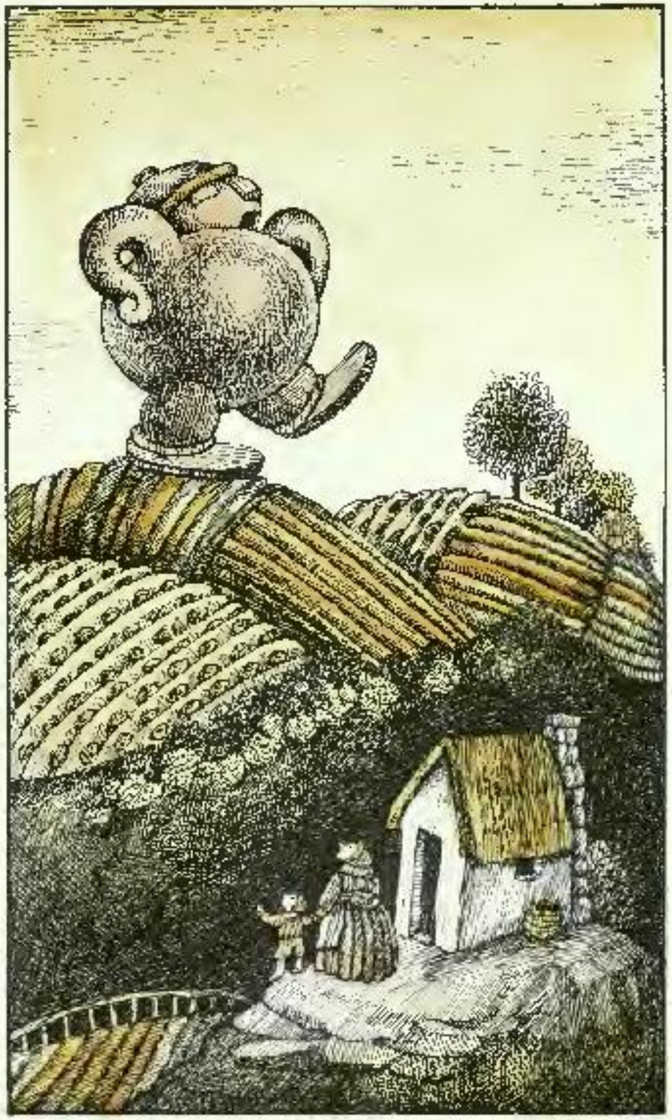


पुस्तक के बारे में

बहुत समय पहले, यहाँ से बहुत दूर एक देश में, एक बूढ़ा आदमी और एक बूढ़ी औरत रहते थे. वे बहुत दुखी थे क्योंकि उनके कोई संतान नहीं थी. इसलिए एक दिन उन्होंने एक छोटे लड़के के आकार का मिट्टी का घड़ा बनाया ताकि वह उनका बेटा बन सके.

लेकिन जैसे ही मिट्टी के घड़े वाले लड़के को चूल्हे से बाहर निकाला गया, वह खाना माँगने लगा. "मुझे भूख लगी है, मुझे ज़ोर की भूख लगी है," वह चिल्लाया. फिर चाहे बूढ़े आदमी और बूढ़ी औरत ने उसे कितना भी खाना खिलाया, लड़का फिर भी भूख से और... और... और... करता रहा और खाने के लिए रोता रहा.

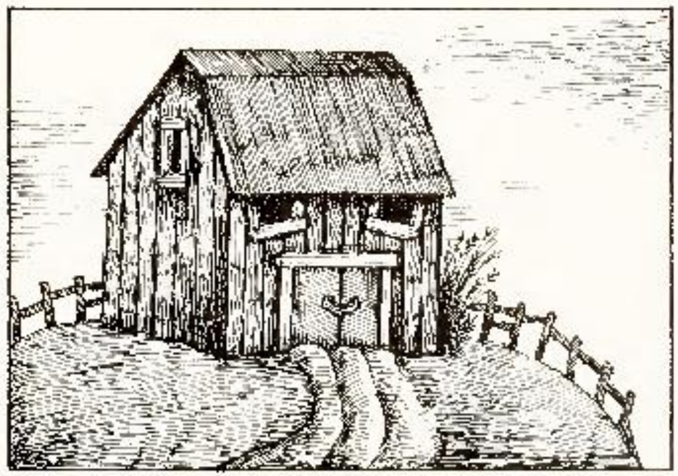




मिट्टी के घड़े वाला लड़का

एक रूसी कहानी पर आधारित

पुनर्कथन: सिंथिया जेमसन
चित्र: अर्नोल्ड लोबेल





बहुत समय पहले

यहाँ से बहुत दूर एक देश में

एक बूढ़ा आदमी

अपनी बूढ़ी औरत के साथ रहता था.

वे बहुत दुखी थे

क्योंकि उनके कोई संतान नहीं थी.

एक दिन

बूढ़ी औरत ने

अपने बूढ़े आदमी से कहा,

"प्रिय पति, एक मिट्टी का घड़ा बनाओ,

जिसका आकार एक छोटे लड़के का हो.

वह हमारा बेटा होगा."





बूढ़े आदमी ने एक छोटे लड़के के

आकार का मिट्टी का घड़ा बनाना शुरू किया.

जब वह काम पूरा कर चुका,

तो उसने घड़े को सुखाने के लिए

भट्टी में रख दिया.

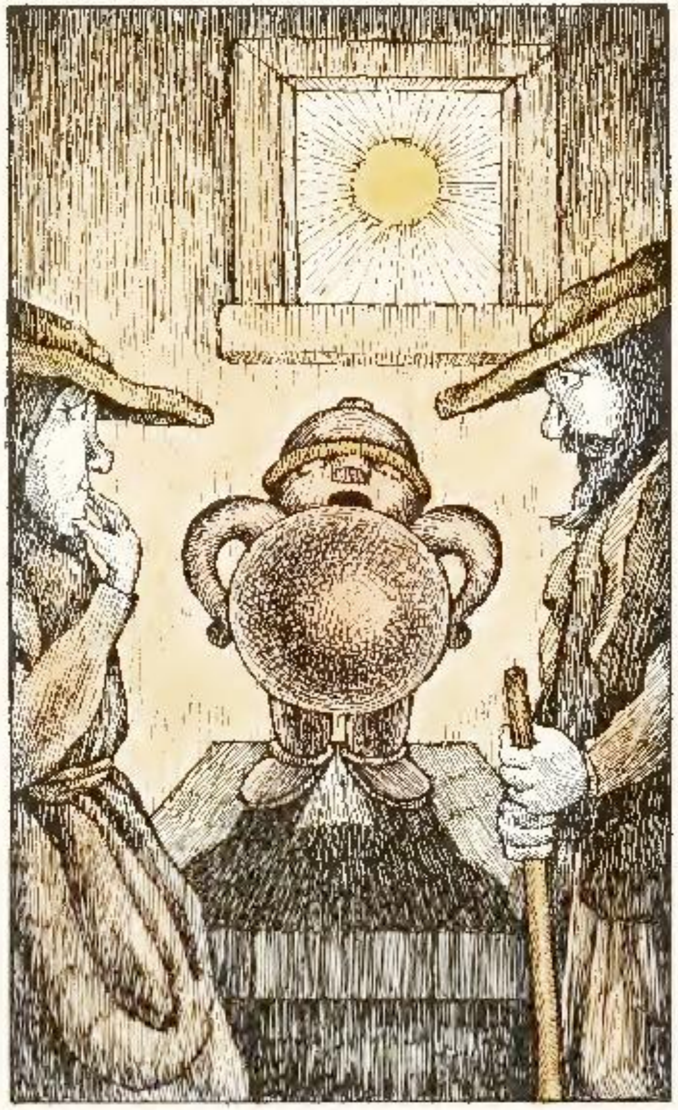
जैसे ही घड़ा सूख गया,

उसे भट्टी से बाहर निकाल लिया गया.

लेकिन जैसे ही वह लड़का रसोई की मेज पर

चमकता हुआ खड़ा हुआ,

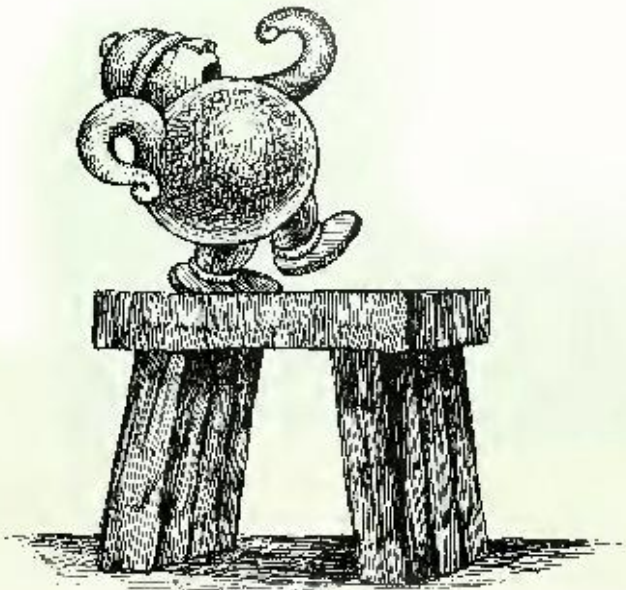
वह खाना माँगने लगा.



"प्रिय बूढ़ी माँ,

मुझे एक टब दूध

और मुलायम सफेद रोटी दो."



बूढ़ी औरत

एक टब दूध

और मुलायम सफेद रोटी की

एक टोकरी ले आई.





इससे पहले की बूढ़ी औरत पलक झपकती,

मिट्टी के घड़े वाला लड़का

सारी रोटी खा चुका था

और सारा दूध पी चुका था.

उसके बावजूद वो बार-बार चिल्ला रहा था,

"मुझे भूख लगी है! मुझे ज़ोर की भूख लगी है!"

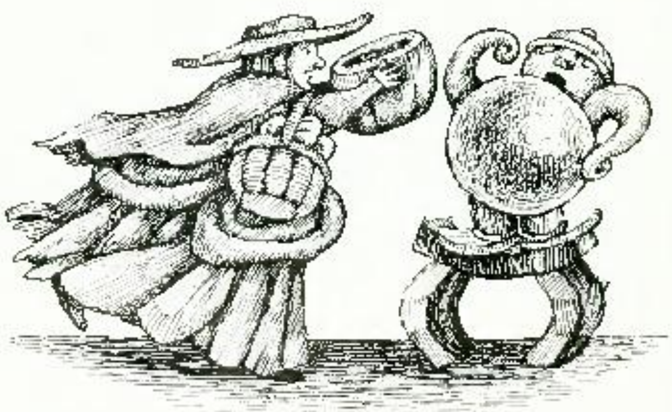


और बार-बार,

बूढ़ी औरत दूध के टब

और मुलायम सफेद रोटी की

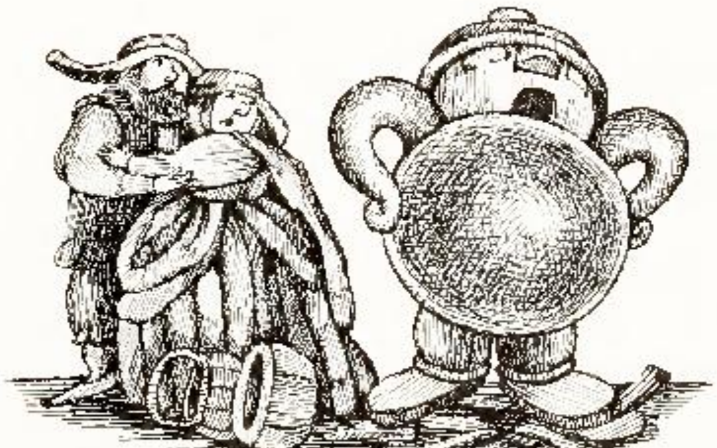
टोकरियाँ लेकर आती रही.





जल्द ही गाँव में दूध की एक बूँद नहीं बची

और रोटी का एक टुकड़ा तक नहीं बचा.



"मुझे भूख लगी है!

मुझे भूख लगी है!" वह चिल्लाया.

"देखो, अब खाने के लिए कुछ नहीं है,"

बूढ़ी औरत ने कहा.

और उसके तुरंत बाद,

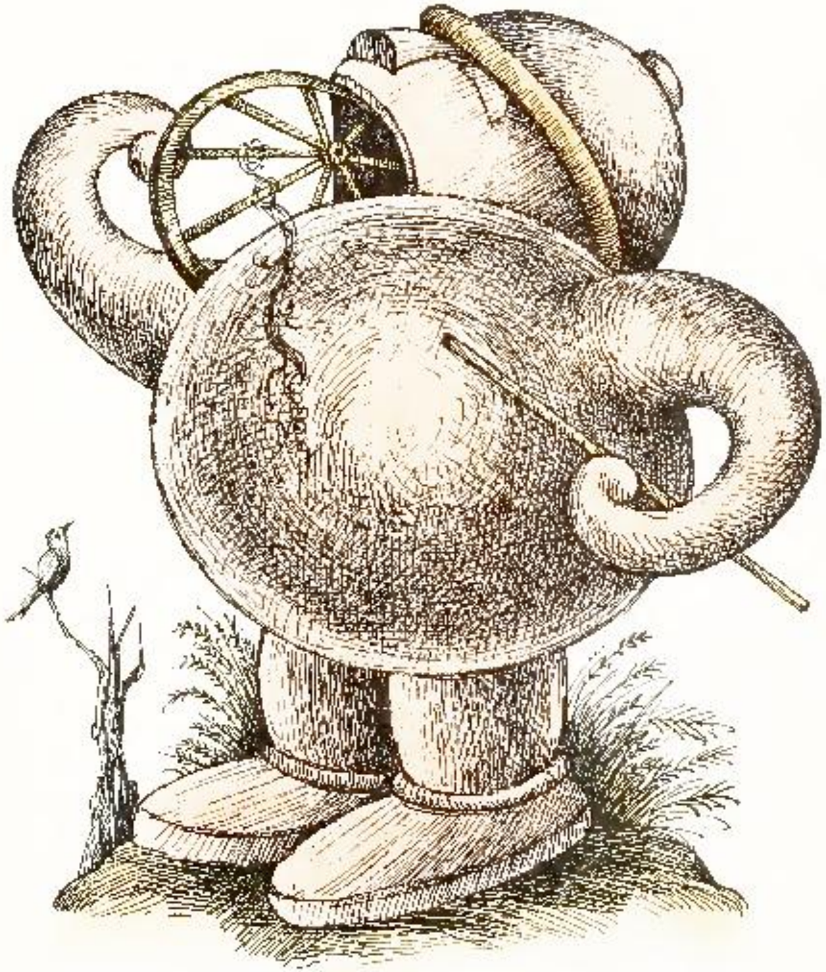
मिट्टी के घड़े वाले लड़के ने

बूढ़ी औरत को

उसके चरखे समेत,

और बूढ़े आदमी को

उसकी छड़ी समेत खा लिया.



जल्द ही मिट्टी के घड़े वाला लड़का

गाँव की सड़कों पर

आगे बढ़ने लगा.

वहाँ उसकी मुलाकात एक बैल से हुई.

उसने बैल को एक नज़र देखा

और कहा,



"मैंने दस टब दूध पी लिया.

मैंने पाँच टोकरी रोटी खा ली,

बूढ़ी औरत को

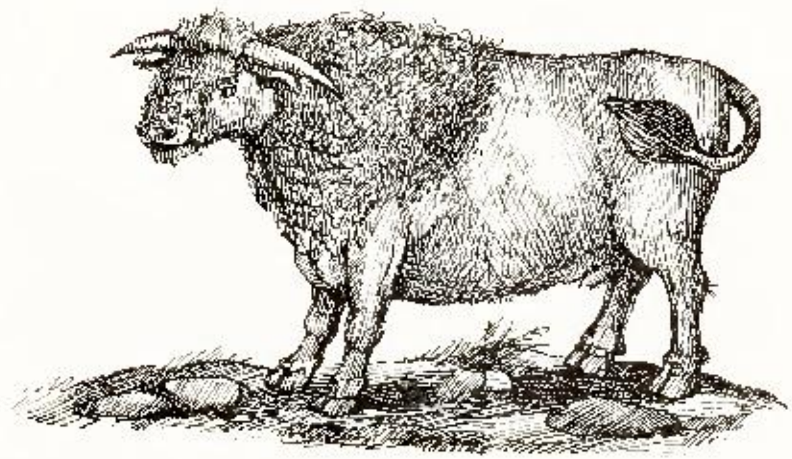
उसके चरखे समेत,

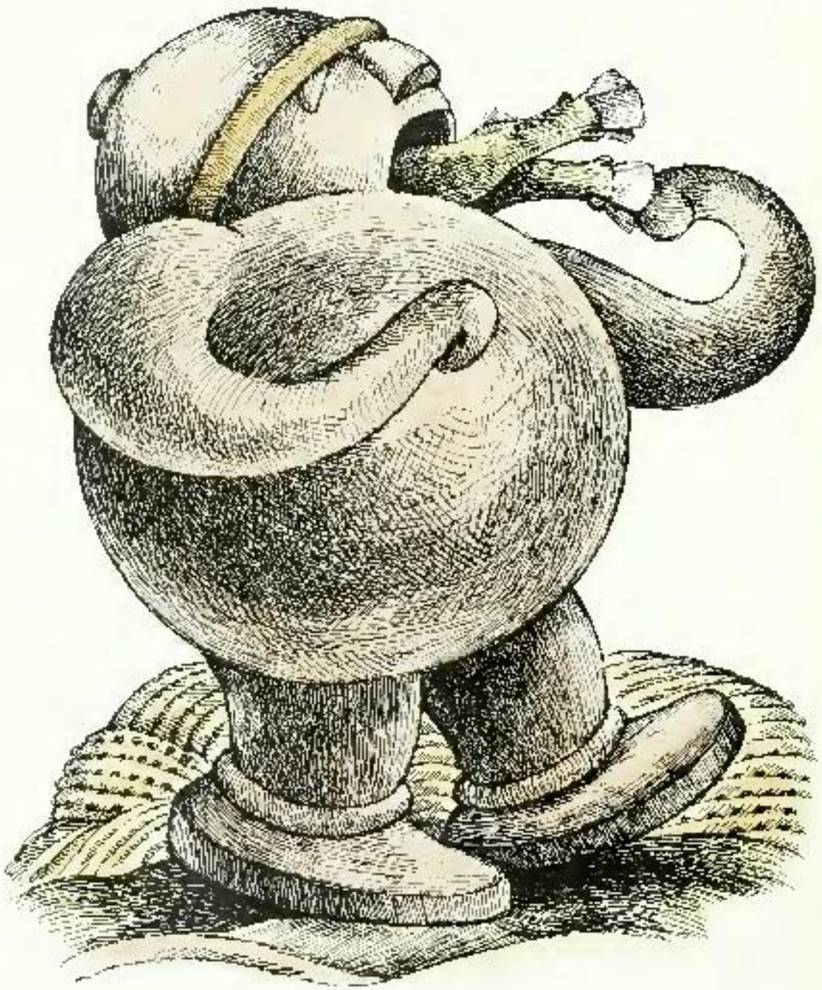
और बूढ़े आदमी को

उसकी छड़ी समेत खाया.

और अब, बैल,

मैं तुम्हें भी खा जाऊँगा!"

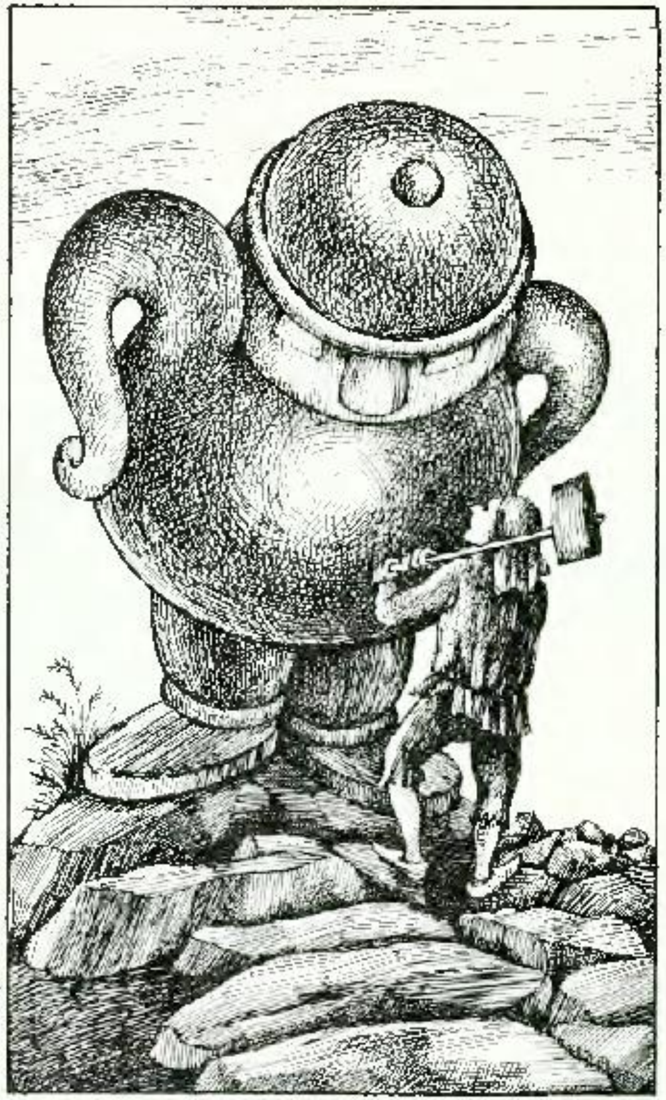




फिर, एक ही घूँट में,

वो बैल को निगल गया,

सींग समेत.

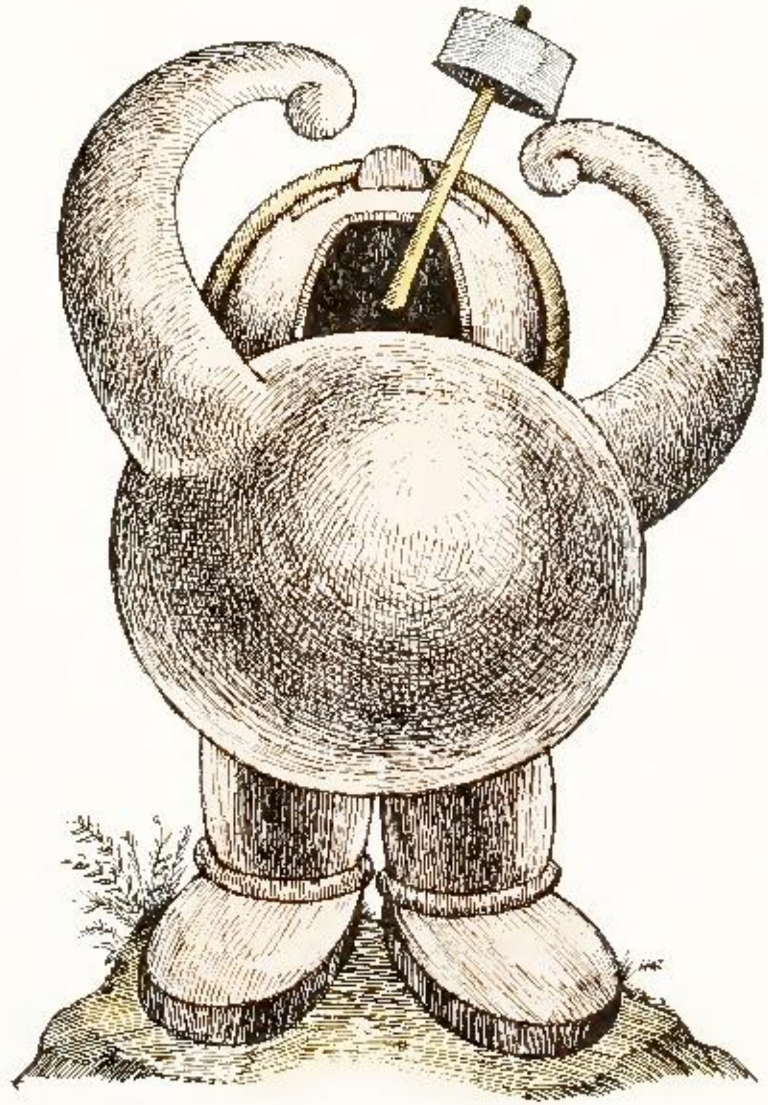


मिट्टी के घड़े वाला लड़का चलता रहा
कुछ ही देर में वह
एक लकड़हारे के पास पहुँचा
लकड़हारे के पास उसकी कुल्हाड़ी थी.
उसने लकड़हारे को रोका और कहा,
"मैंने दस टब दूध पी लिया.
मैंने पाँच टोकरी रोटी खा ली,
बूढ़ी औरत को उसके चरखे समेत,
बूढ़े आदमी को उसकी छड़ी समेत,
एक बैल को उसके सींग समेत खाया.
और अब, लकड़हारे,
मैं तुम्हें भी खा जाऊँगा!"

जल्दी ही,

वो लकड़हारे को

उसकी कुल्हाड़ी समेत निगल गया.



मिट्टी के घड़े वाला लड़का

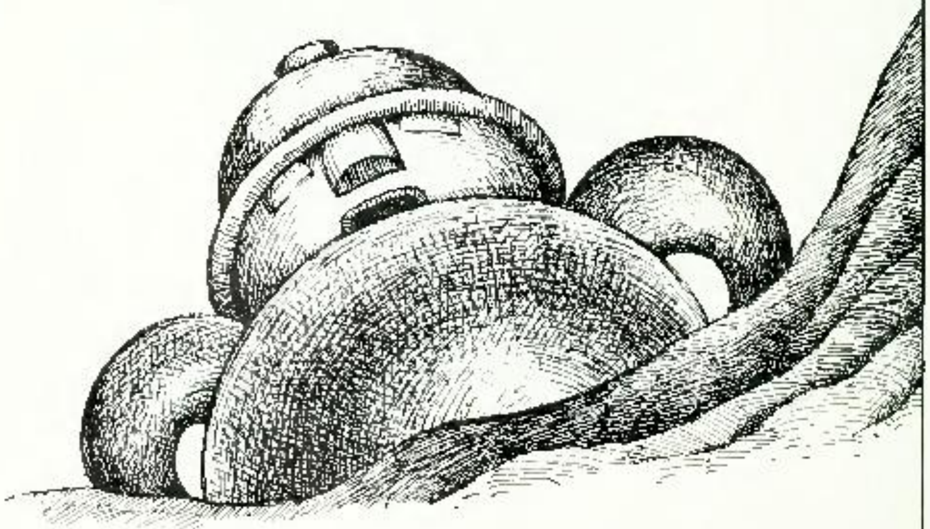
अब काफी मोटा और भारी हो गया था

अब वह बहुत धीरे-धीरे ही चल पा रहा था.

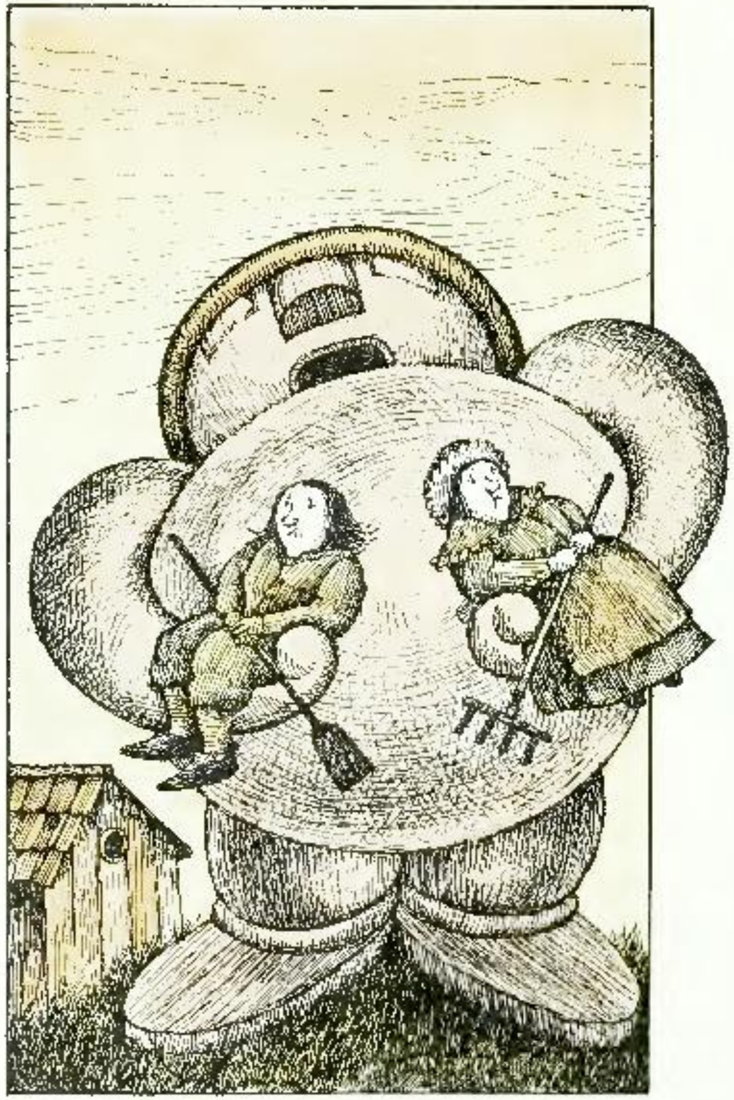
फिर कुछ समय बाद

उसे किसान अपनी कुदाल और

किसान की पत्नी अपने बेलचे के साथ मिली.







उन्हें देखते ही उसने कहा,

"मैंने दस टब दूध पी लिया.

मैंने पाँच टोकरी रोटी खा ली,

बूढ़ी औरत

को उसके चरखे समेत,

बूढ़े आदमी

को उसकी छड़ी समेत,

बैल को उसके सींगों सहित,

और लकड़हारे को

उसकी कुल्हाड़ी के साथ खाया.

और अब, किसान

मैं तुम्हें और तुम्हारी पत्नी,

को भी खाने वाला हूँ!"

मिट्टी के घड़े वाले लड़के ने

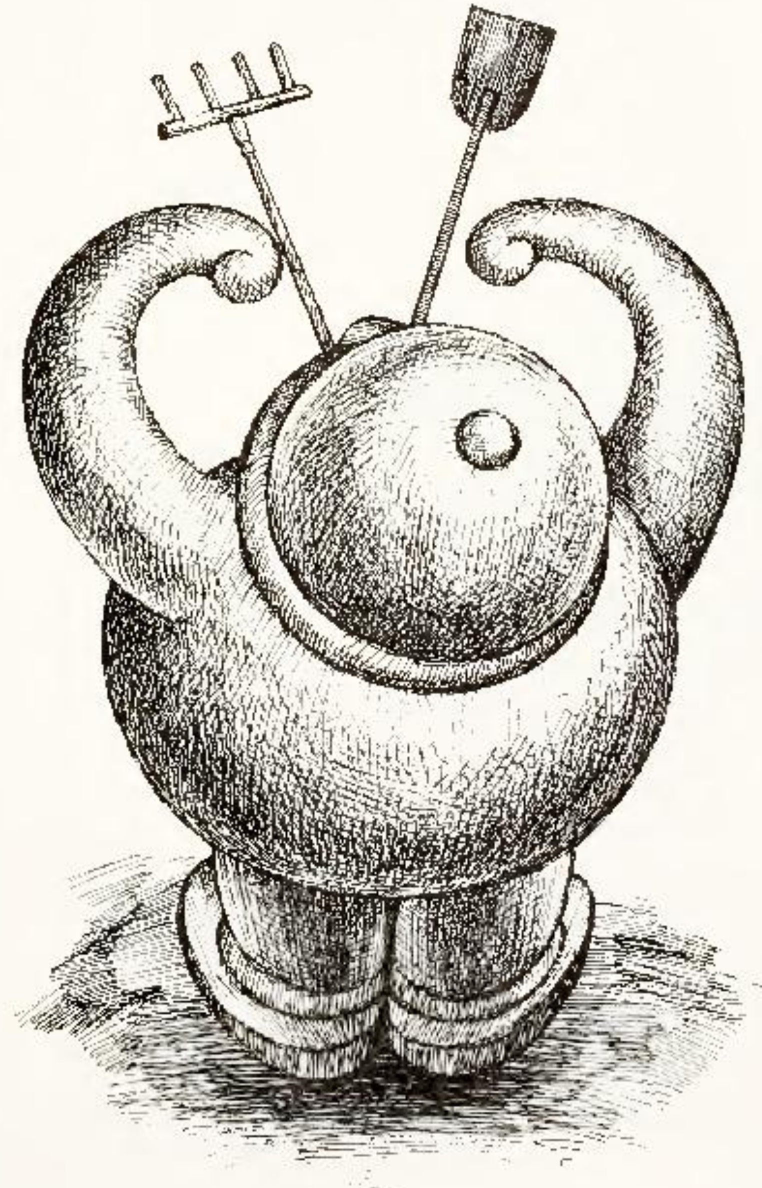
अपना बड़ा मुँह खोला

और वो किसान को

उसकी कुदाल समेत

और किसान की पत्नी को

उसके बेलचे समेत खा गया.



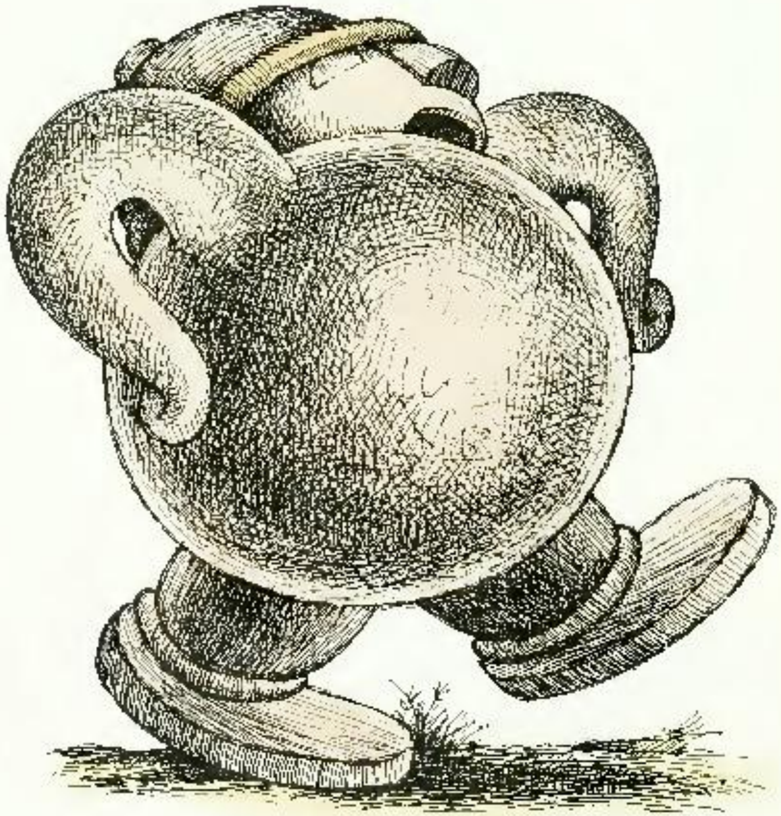
ज़्यादा देर नहीं हुई थी

कि मिट्टी के घड़े वाले लड़के को

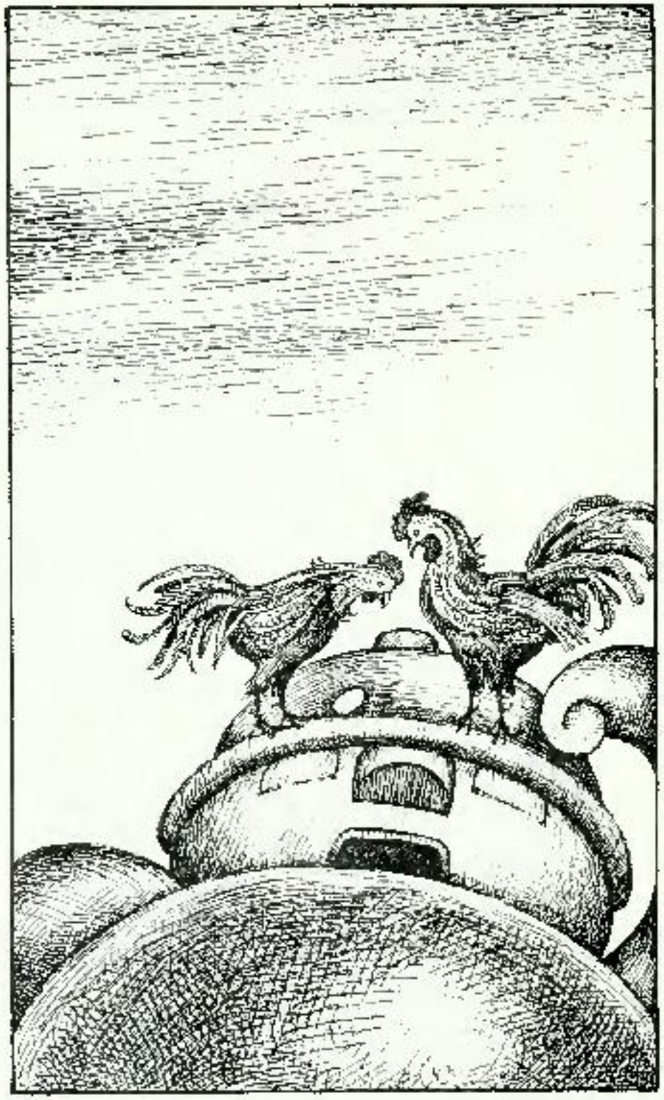
एक मुर्गा बाँग देता हुआ

और एक मुर्गी अपने

अंडे पर बैठी हुई दिखाई दी.







वह वहीं रुका

और उनसे कहा,

"मैंने दस टब दूध पिया.

मैंने पाँच टोकरी रोटी खाई,

बूढ़ी औरत

को उसके चरखे समेत,

बूढ़े आदमी को

उसकी छड़ी समेत,

बैल को उसके सींगों सहित,

लकड़हारे को उसकी कुल्हाड़ी के साथ,

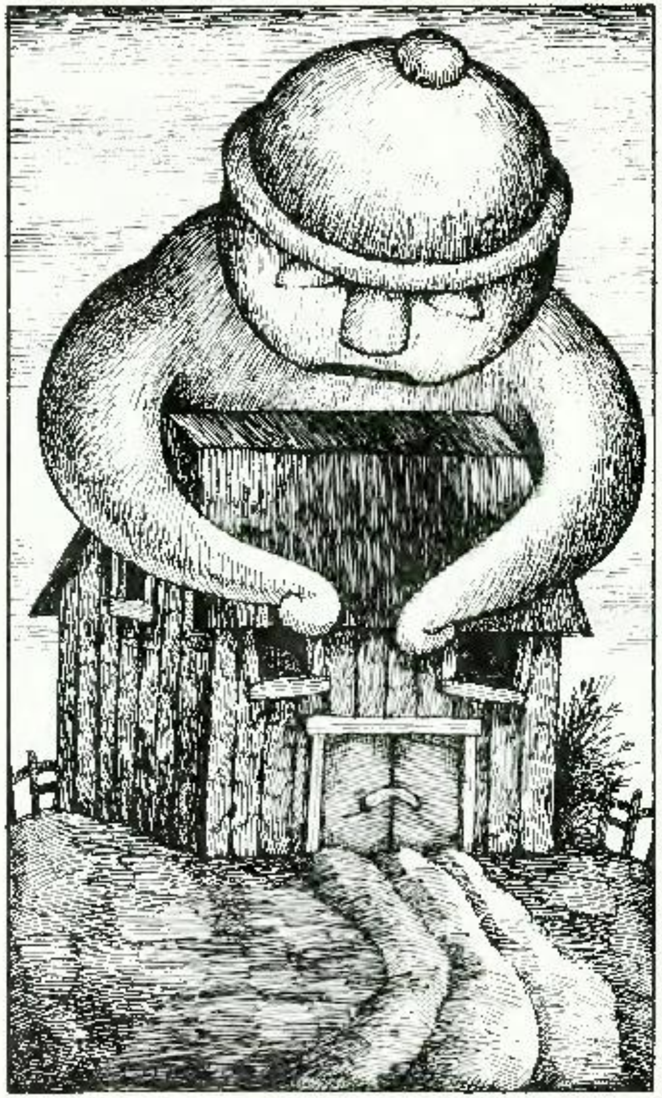
किसान को उसकी कुदाल के साथ,

और किसान की पत्नी को

उसके बेलचे के साथ खाया.

"और अब, मुर्गे और मुर्गी,
मैं तुम दोनों को खाने जा रहा हूँ—
और साथ में अंडा भी!"
फिर पलक झपकते ही
वो मुर्गे को
और मुर्गी को और अंडे को खा गया.
अब मिट्टी के घड़े वाला लड़का
खाने के बाद मिठाई खाने को तैयार था.
उसने चारों ओर देखा
और उसे एक बढ़िया लकड़ी का
खलिहान दिखाई दिया.





"मैं तुम्हें देख रहा हूँ,"

मिट्टी के घड़े वाले लड़के ने

बढ़िया लकड़ी के खलिहान से कहा.

"मैंने दस टब दूध पिया.

मैंने पाँच टोकरियाँ रोटी खाईं,

बूढ़ी औरत

को उसके चरखे समेत,

बूढ़े आदमी को

उसकी छड़ी समेत,

बैल को उसके सींगों समेत,

लकड़हारे को उसकी कुल्हाड़ी के साथ,

किसान को उसकी कुदाल के साथ,

किसान की पत्नी को उसके बेलचे के साथ,

मुर्गा जो बाँग दे रहा था,

और मुर्गी जो अंडे पर बैठी थी

उनको भी खा लिया.

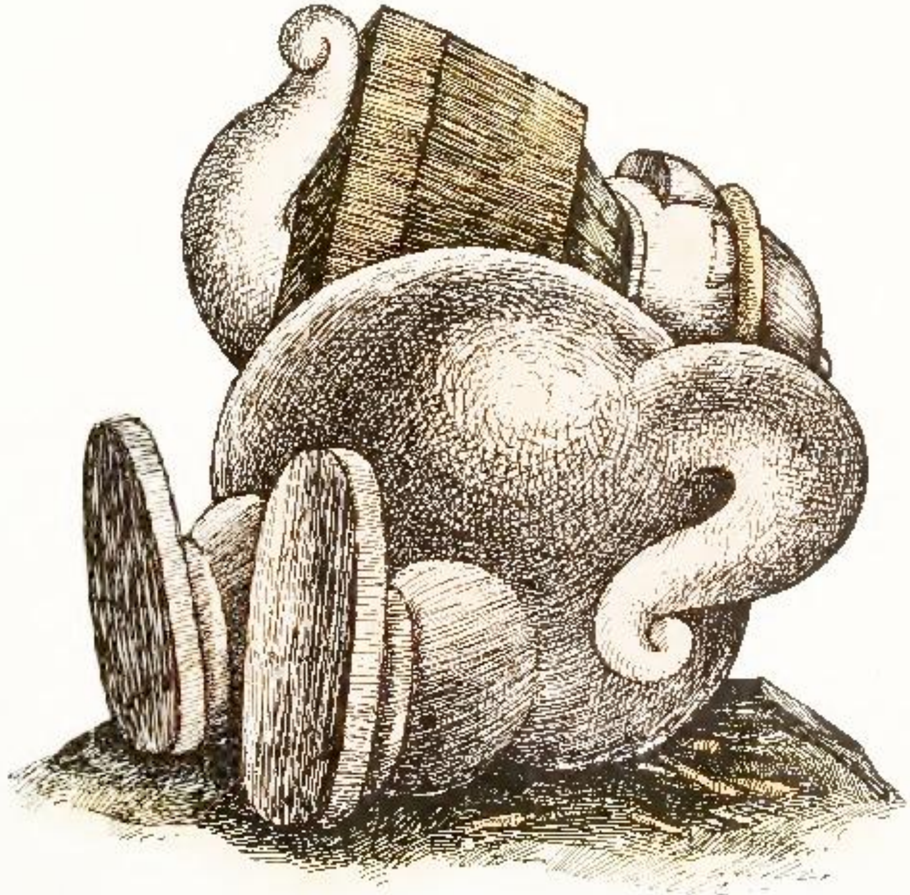
"और अब, लकड़ी के खलिहान,

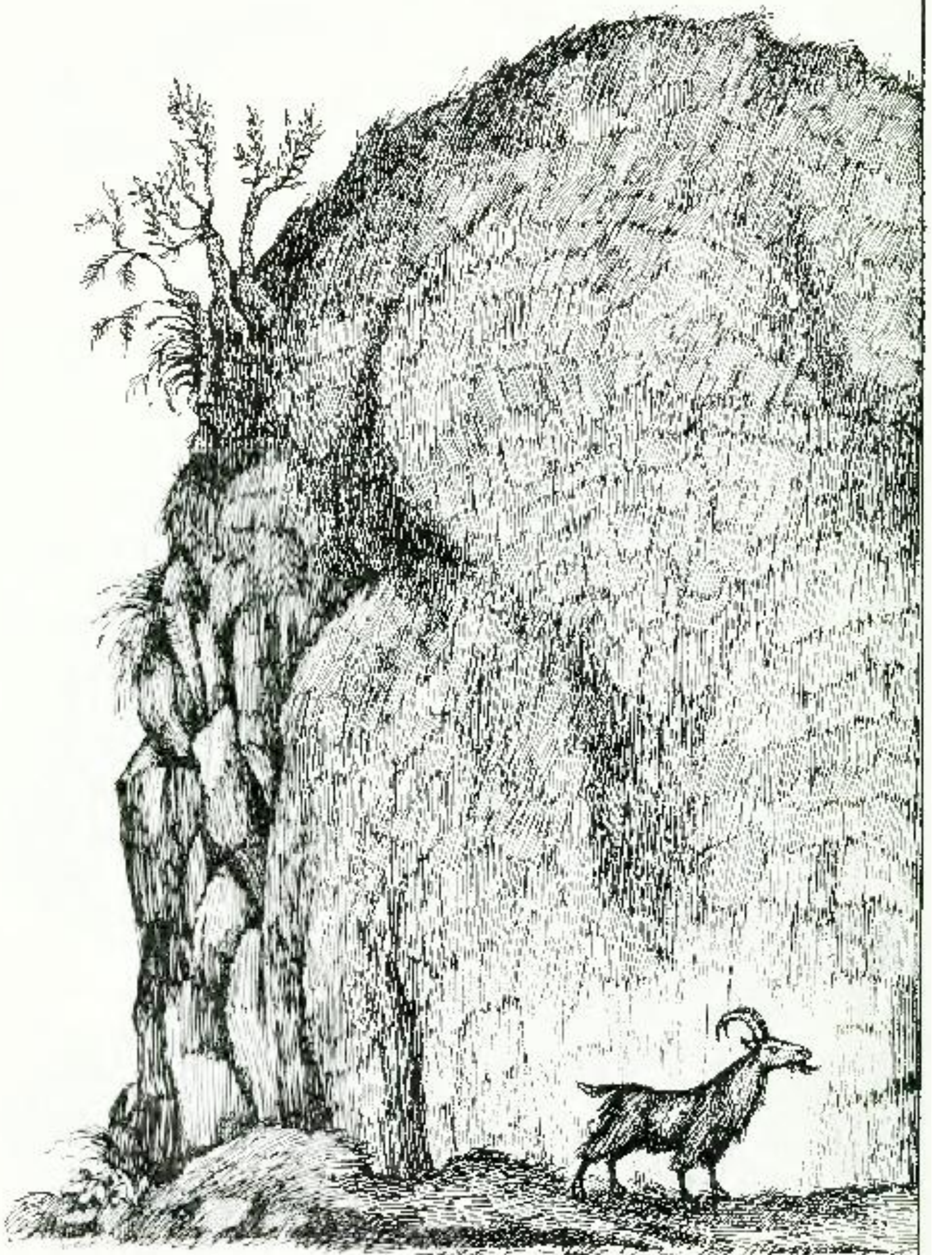
मैं तुम्हें भी खा जाऊँगा."

फिर उसने खलिहान को

एक ही निवाले में निगल लिया.

बस एक ही निवाले में!



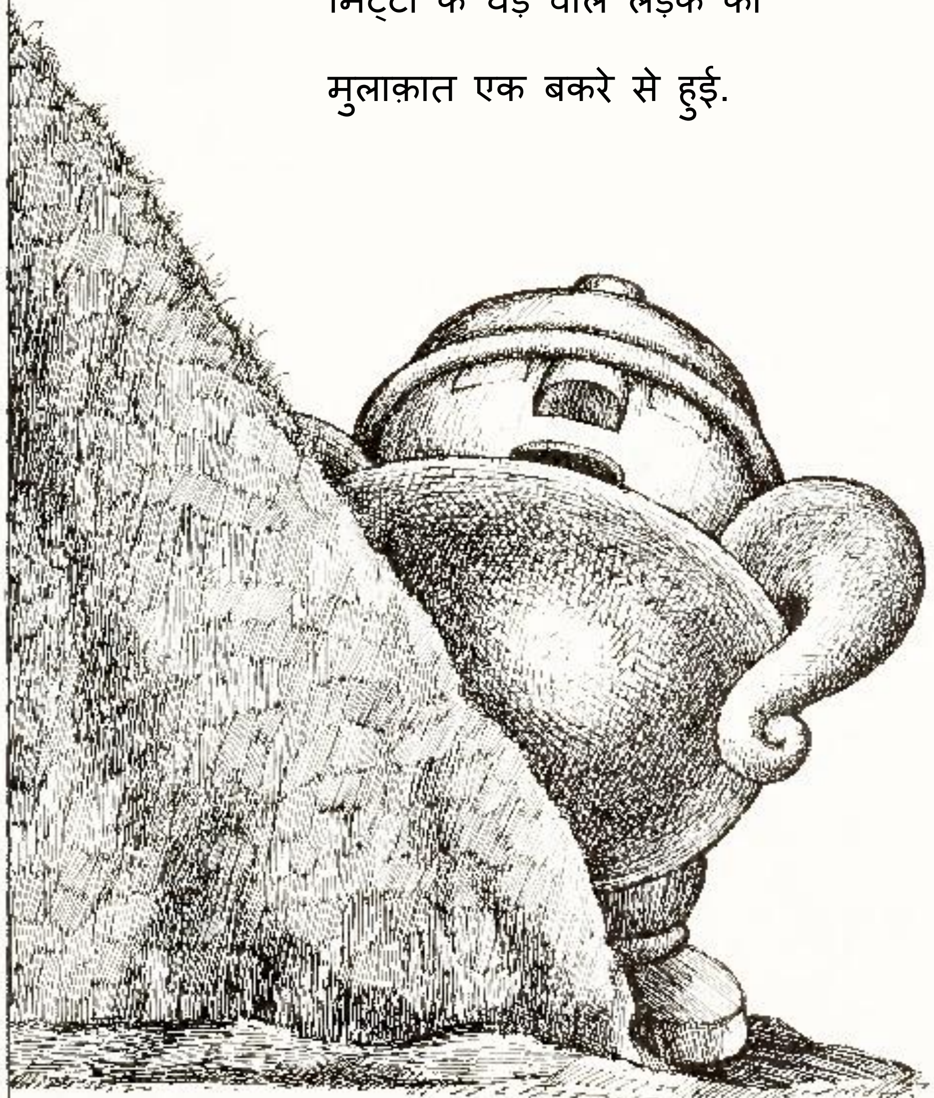


थोड़ी देर बाद,

बड़ी पहाड़ी की तलहटी में,

मिट्टी के घड़े वाले लड़के की

मुलाक़ात एक बकरे से हुई.



बहुत धीरे-धीरे,

वह बकरे की ओर लडखड़ाता हुआ पहुंचा

और उसने उससे कहा,

"मैंने दस टब दूध पिया.

मैंने पाँच टोकरी रोटी खाई,

बूढ़ी औरत

को उसके चरखे समेत,

बूढ़े आदमी को उसकी छड़ी के साथ,

बैल को उसके सींगों सहित,

लकड़हारे को उसकी कुल्हाड़ी के साथ,

किसान को उसकी कुदाल के साथ,

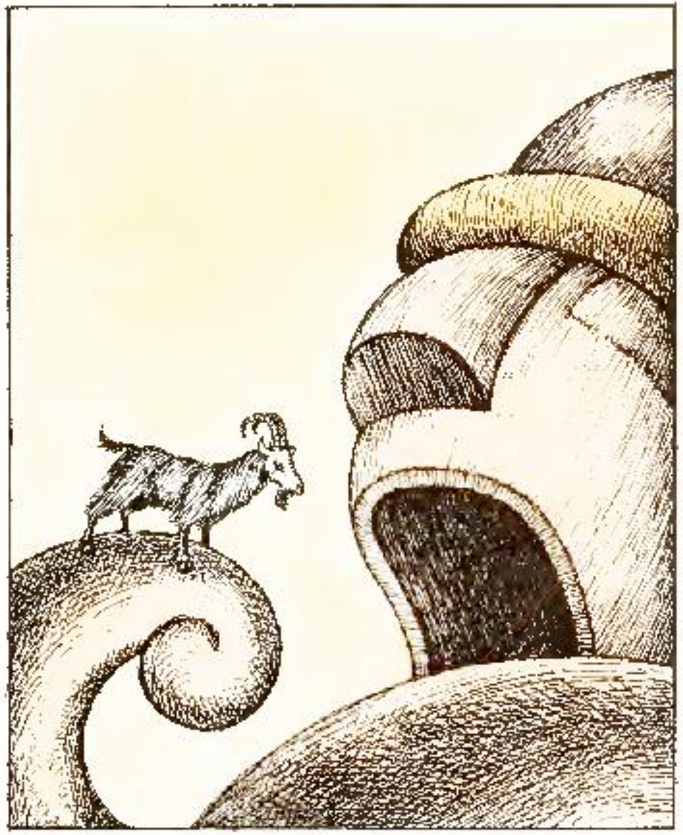
किसान की पत्नी को उसके बेलचे के साथ,

मुर्गा जो बाँग दे रहा था,

मुर्गी जो अंडे पर बैठी थी,

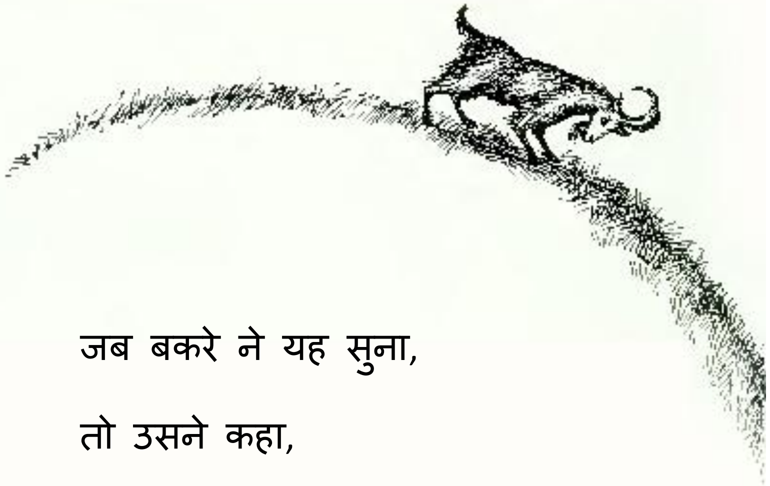
फिर मैं बढ़िया लकड़ी का खलिहान

भी खा चुका हूं.



"और अब, बकरे,

मैं तुम्हें भी खा जाऊँगा!"



जब बकरे ने यह सुना,

तो उसने कहा,

"कितना बढ़िया विचार है!

मैं खाने में तुम्हारी ज़रूर मदद करूँगा.

तुम यहाँ पहाड़ी की तलहटी में रुको,

और मैं पहाड़ी से नीचे दौड़कर

सीधे तुम्हारे मुँह में कूद जाऊँगा."

मिट्टी के घड़े वाले लड़के को

यह एक अच्छी योजना लगी.

वह पहाड़ी की तलहटी में खड़ा

होकर इंतज़ार करता रहा

जबकि बकरा पहाड़ी पर

ऊपर चढ़ गया.



बकरे ने

अपने बड़े सींग नीचे झुकाए.

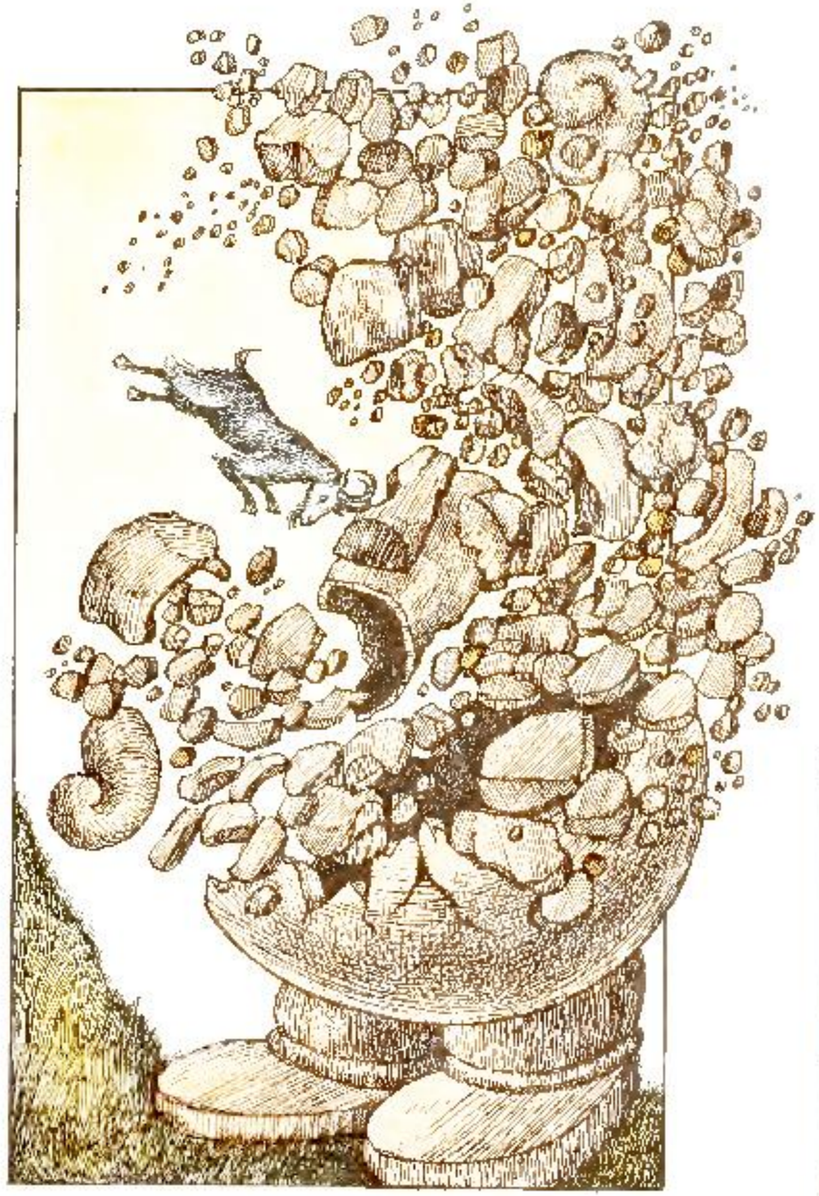
वह पहाड़ी से नीचे दौड़ा

और मिट्टी के घड़े वाले लड़के से

ज़ोर से जाकर टकराया

उसने मिट्टी के घड़े वाले लड़के को

हज़ार छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ दिया!



मिट्टी के घड़े के

टुकड़ों के ढेर में से



बूढ़ी औरत अपने चरखे के साथ,

बूढ़ा आदमी अपनी छड़ी के साथ,



बैल, अपने सींगों सहित,

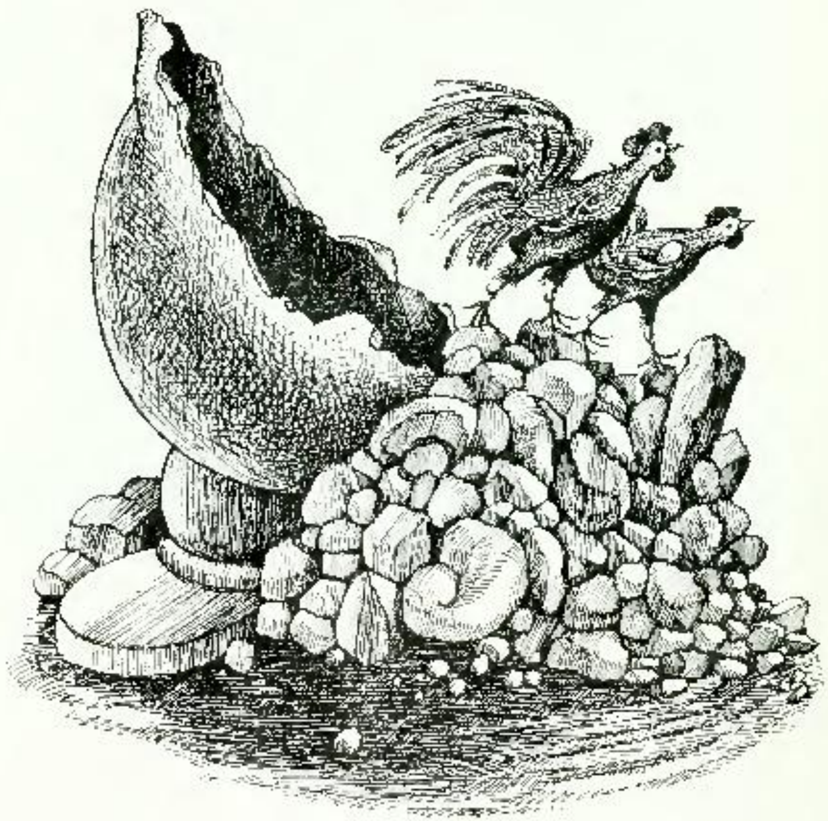


लकड़हारा अपनी कुल्हाड़ी के साथ,



किसान अपनी कुदाल के साथ,

किसान की पत्नी अपने बेलचे के साथ,



मुर्गा जो बाँग दे रहा था,

और मुर्गी अपने अंडे के साथ.

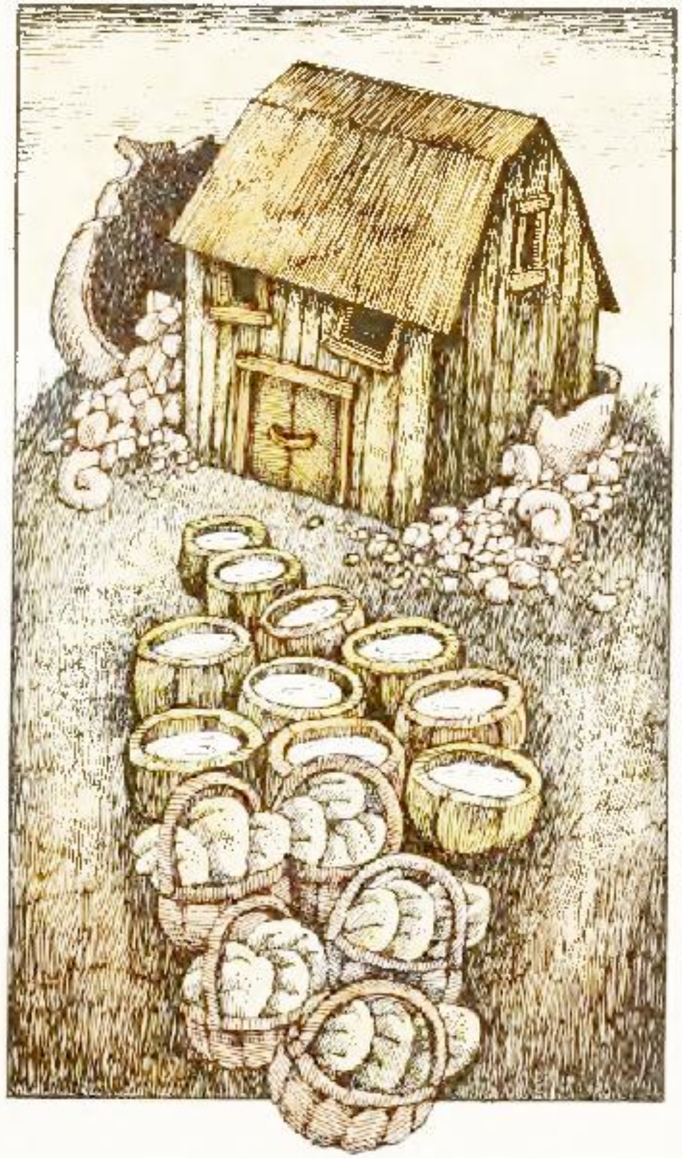
और मिट्टी के बर्तनों के टुकड़ों के

ढेर के ठीक बीच में...

लकड़ी का बढ़िया खलिहान,

दूध के दस टब,

और रोटी की पाँच टोकरियाँ रखी थीं.

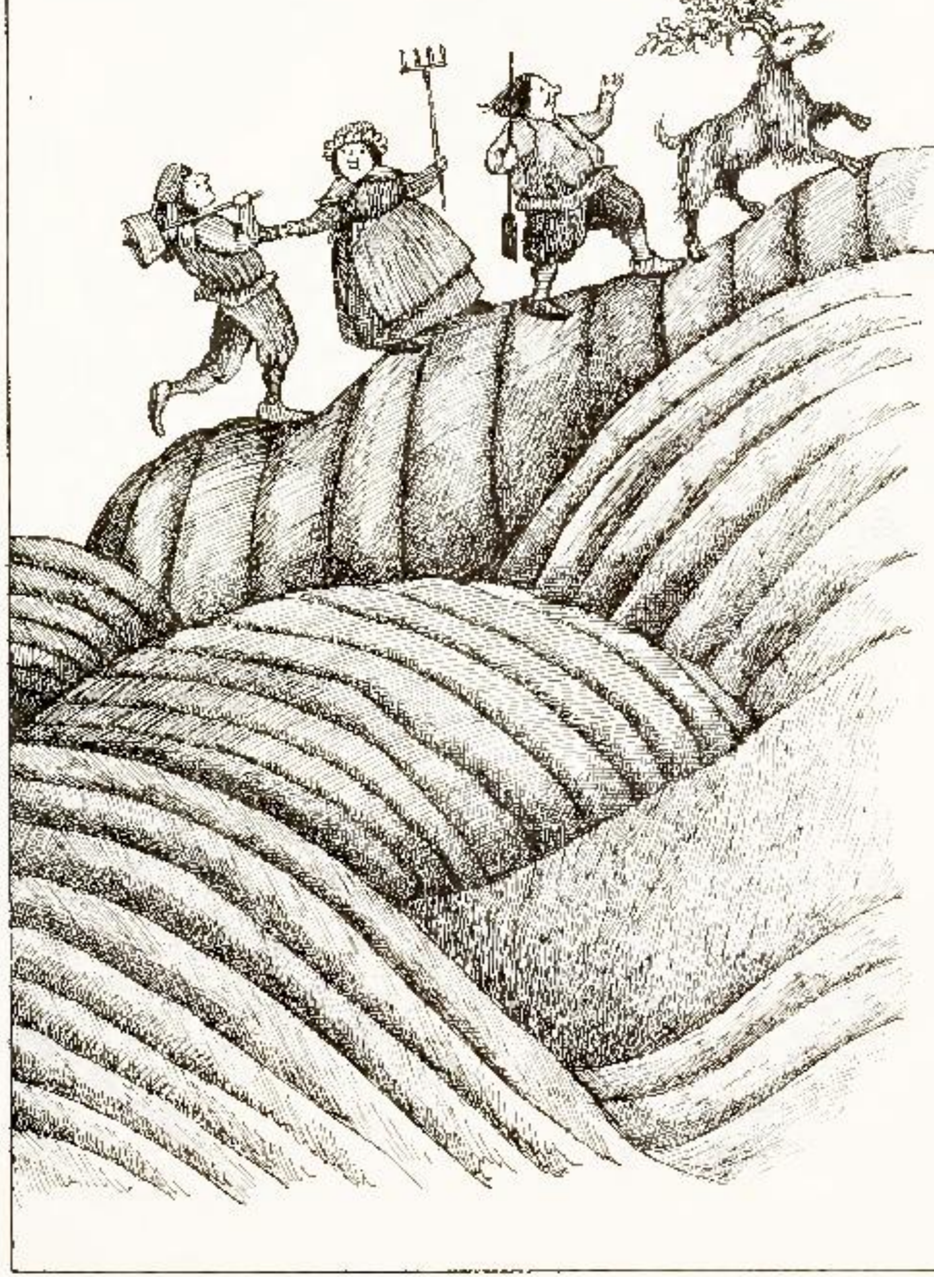


उस दिन से गांव के सभी लोग

उस बहादुर बकरी से

प्यार करने लगे.







उसके बाद बूढ़े आदमी

और उसकी बूढ़ी औरत ने

फिर कभी कोई मिट्टी के

घड़े वाला लड़का नहीं बनाया.

अंत

